चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	22-3-24	2	4-8

The Tribune

Farm specialists mull ways to nip pink bollworm menace

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 21

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) Vice-Chancellor Professor BR Kamboj said the increasing risk of an outbreak of pink bollworm in cotton crops in the northern region of the country was a matter of growing concern for farmers and agricultural scientists.

Various stakeholders, including agriculture scientists, officials and representatives from different seed firms, gathered at the HAU to discuss the problem here today. Farmers' representatives from Haryana, Punjab and Rajasthan and other cotton growing districts also participated in the seminar.

The VC said that to resolve the problem, they would have to take concrete steps collectively and save farmers from major financial losses. "Last year, there was a high incidence of pink bollworm. The farmers used pesticides indiscriminately, which is concerning. To control this pest, biological pesticides and other pest management measures will have to be discovered with the collective efforts of all stakeholders," he said.

Farmers are advised to refrain from keeping the branches of the harvested cotton plants in the fields as it increase the risk of carrying forward the pest to the next season. The farmers should sow only varieties which are recommended by the agricultural universities and BT-approved by May 15. They also must not mix pesticides and fungicides, the experts said, adding that after sowing the cotton, farmers must monitor their fields and if pink bollworm infestation is noticed, take measures to control the infestation, as advised by experts.

Director of Extension Education Dr Balwan Singh Mandal presented the progress report of the work done for the management of pink bollworm through all the agricultural science centres of the university.

Dr Karmal Singh, incharge of cotton section, discussed in detail the situation of pink bollworm outbreak in cotton crop in the state in 2023. Dr Satnam Singh, senior scientist of Punjab Agricultural University (PAU), Ludhiana, and Dr Pradeep Kumar, scientist of Rajasthan Agricultural University, Bikaner, shared information about the status of cotton and the outbreak of pink bollworm in their respective states.

Joint Director (Cotton) of Haryana Agriculture and Farmers Welfare Department RP Sihag gave information about the activities carried out by the department.

Dr Rishi Kumar, Director, Central Institute for Cotton Research (CICR), Sirsa, discussed the problems of cotton and their management in North India.

Meanwhile, representatives of private seed companies also gave important suggestions regarding the control and management of pink bollworm. Farmers from different districts shared their views and experiences.

TIPS TO KEEP IN MIND

- Refrain from keeping branches of harvested plants in the fields.
- Sow only varieties which are recommended by agricultural universities and BT-approved by May 15.
- Do not mix pesticides and fungicides while spraying.
- Monitor fields conitnuously, if pink bollworm infestation is noticed, take measures to control it immediately.

<<Experts at the meeting at the HAU in Hisar on Thursday.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	22.3.24	4	2-5

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि वैज्ञानियों व किसानों का गुलाबी सुंडी प्रबंधन पर मंथन

नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को रोकने को उठाने होंगे ठोस कदम: काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकें। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है।

किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई हैं तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई के बाद अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताए अनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

हिसार. हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

2023 में हुए गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी ली

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एसएस यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में चर्चा की। पंजाब कृषि विवि के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक कपास आरपी सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	22.3.25	4	1-4

तीन राज्यों के कृषि विज्ञानियों, अधिकारियों व किसानों का गुलाबी सुंडी के प्रबंधन पर मंथन

प्रो. बीआर काम्बोज बोले- सामूहिक और ठोस कदम उठाने से होगा समाधान

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे, तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिंडों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बंछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए। • पीआरओ

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डा. एसके धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डा. एसएस यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डा. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आरपी सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा के निदेशक डा. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	22.3.24	2	1-4

गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए किसान 15 मई से पहले कर लें नरमा की बिजाई

एचएयू में कृषि वैज्ञानिक, किसान व बीज कंपनी प्रतिनिधियों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किया मंथन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए गुलाबी सुंडी नियंत्रण पर एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे।

उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए किसानों को 15 मई से पहले नरमा की बिजाई पूरी कर लेनी होगी। सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था। इसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया। कीटनाशकों का इतना प्रयोग चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा। हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। इसके लिए सबसे पहला उपाय यही है कि किसान नरमे की बनछटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई हैं तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिंडों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की निरंतर निगरानी रखें।

एचएयू में नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों संग बैठक करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत : संस्थान

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। परियोजना निदेशक डॉ. एसके धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में डॉ. एसएस यादव, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतनाम सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार, आरपी सिहाग, डॉ. ऋषि कुमार आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	22-3-24	2	3-6

पंजाब केसरी

गुलाबी सुंडी पर नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग चिंतनीय, समाधान का खोजना होगा अन्य उपाय

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के साथ गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किया गहन मंथन

हिसार, 21 मार्च (राठी): देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास/नरमा में लगातार गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ रहा है। इससे किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ गई है। अगर इस पर तुरंत काबू पाने की दिशा में कदम नहीं उठाए गए तो किसानों को काफी नुक्सान हो सकता है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों एवं निजी बीज कम्पनी धारकों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए गहन मंथन किया है।

सैमीनार में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है।

सैमीनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति बारे विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव सांझा किए। सैमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। मंच संचालन सहायक निदेशक, पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया।

गुलाबी सुंडी से बचने के लिए ये उपाय करें किसान: किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो। बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फेरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताए अनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

> उत्तरी क्षेत्र में नरमा/कपास में लगातार गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ रहा है। जो किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुक्सान से बचाया जा सके।
>
> प्रो. बी.आर. काम्बोज, कुलपति हकृवि।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	22.3.24	9	5-8

कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप | **सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : कुलपति**

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों व किसानों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन बारे किया गहन मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकें।

कुलपति प्रो. काम्बोज गुरुवार को विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है।

हिसार। गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप बारे अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एसके धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एसएस यादव ने किया।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी।

भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों के लिए प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	22-3-24	8	3-6

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन

कपास को गुलाबी सुंडी बचाने के बताए उपाय

हिसार, 21 मार्च (हप्र)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

हिसार स्थित हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए। -हप्र

कुलपति ने कहा कि गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें। नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ के बताए अनुसार नियंत्रण के उपाय करें। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	22.3.24	11	5-8

कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप : सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 21 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकें। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें। बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया।कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	22.3.24	3	4-8

कृषि वैज्ञानिकों ने प्रबंधन हेतू किया गहन मंथन, किसानों के लिए जारी की एडवाजरी

गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप, किसान उठाएं ठोस कदम

डॉ. संदीप सिंहमार।

उत्तर भारत में कपास/नरमा एक महत्वपूर्ण फसल है। इस फसल से जहां देश में कपड़ा उद्योग को बल मिलता है तो वहीं किसानों की भी आय में भी बढ़ोतरी होती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है, जो किसानों के लिए ही नहीं कृषि वैज्ञानिकों के लिए भी चिंता का सबब बन रहा है।

गुलाबी सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में देशभर से जुटे कृषि वैज्ञानिकों ने गहन मंथन किया। कृषि वैज्ञानिकों से हकृवि के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने आह्वान करते हुए कहा कि इसके समाधान के लिए सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके

नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है।

कीटनाशकों का प्रयोग हानिकारक, खोजने होंगे जैविक उपाय

गुलाबी सुंडी के कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें।

फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें किसान

- किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

- विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

कपास की अन्य समस्याओं पर हुई विस्तृत चर्चा

भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अलग-अलग जिलों से आए किसानों ने अपने-अपने विचार एवं अनुभव साझा किए।

सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया। भविष्य में संभावित गुलाबी सुंडी के प्रकोप को देखते हुए किसानों को भी कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार ही कृषि कार्य निपटाना चाहिए ताकि उन्हें किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	21.03.2024	--	--

कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप - सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्डोटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्डोटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी.टी. संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान नरमे की बिजाई उपरांत अपने खेत की फीरोमोट्रेप से निरंतर निगरानी रखें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर निकटतम कृषि विशेषज्ञ से बताएनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जोगेराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.03.2024	--	--

अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को खाने व रहने की चिंता न हो, ऐसी भारत की परिकल्पना : प्रो. काम्बोज

हकृवि में दी रोल ऑफ यूथ इन दा विजन एंड मिशन ऑफ विकसित भारत 2047 विषय पर कार्यक्रम आयोजित

शोषणमुक्त व क्षमतायुक्त हो भारत : मुख्य वक्ता सुरेश जैन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	21.03.2024	--	--

हकृवि में कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों, किसानों और निजी बीज कंपनी प्रतिनिधियों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन को लेकर किया गहन मंथन

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा किसानों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान भाई कपास की बनछटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई हैं तो किसान उन्हें फरवरी से पहले अच्छे ढंग से झाड़कर उन्हें छाया में रखें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों में छिपकर बैठी गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। इसके अलावा नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बीटी संकर किस्मों की 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें। किसान भाई बिजाई उपरांत अपने खेत की फेरोमोन ट्रैप से निगरानी करते रहें तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप नजर आने पर नजदीकी कृषि विशेषज्ञ से सलाहनुसार नियंत्रण के उपाय करें।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रदेश में नरमा कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रदेश में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार की एवं सभी के सामूहिक प्रयासों हेतु प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	21.03.2024	--	--

कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप, सामूहिक व ठोस कदम उठाने से होगा समाधान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

[illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.03.2024	--	--

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों और किसानों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किया मंथन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कपास/नरमा में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा। तभी किसान को बचाया जा सकता है।

बैठक में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु किए गए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि परियोजना निदेशक डॉ. एस.के. धनखड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। बैठक में मंच संचालन सहायक निदेशक पौध संरक्षण डॉ. एस.एस. यादव ने किया।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने वर्ष 2023 में हरियाणा प्रांत में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति के बारे में चर्चा की।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतनाम सिंह एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने-अपने प्रांत में कपास की स्थिति एवं गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) आर.पी. सिहाग ने विभाग द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।